योगदा आश्रम

शरद संगम में ईश्वरानुभूति की बही बयार

संगम मे देश-विदेश के लोगों ने लगाई डुबकी

संवाददाता

रांची : शरद संगम में जो स्वर्ग का आनन्द प्राप्त कर रहे हैं, इस स्वर्ग को आप अपने घर में भी महसूस करें और इस एहसास को अपने घर तक ले जाये, क्योंकि ये आनन्द, ये ईश्वरानुभूति ही मनुष्य को परम आनन्द की ओर ले जाती है। ये बातें बुधवार को शरद संगम के अंतिम दिन समापन समारोह में योगदा सत्संग आश्रम के स्वामी स्मरणानन्द ने कही। उन्होंने मुख्य पंडाल में देश-विदेश से आये भक्तों को संबोधित करते हुए कहा, ये शरद संगम दरअसल भक्तों द्वारा, भक्तों के लिए, भक्तों को समर्पित रहा है, जिसमें गुरुजी परमहंस योगानन्द जी ने अपने स्नेहाशीष की वर्षा की, जिससे लोगों को स्वर्गिक आनन्द प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि आप ध्यान को, सदा के लिए अपने जीवन की दिनचर्या में शामिल कर लें, निरन्तर इसका अभ्यास करते रहें, कभी समस्या आएं तो घबराएं नहीं, समस्याओं के बीच भी आनन्द को महसूस करते रहें। हो सके तो सामूहिक ध्यान पर विशेष ध्यान दें, ये न भूलें हमारे साथ गुरुजी का आशीर्वाद हैं, जो हमें निरन्तर ऊर्जान्वित करते रहते हैं । उन्होंने यह भी कहा कि सिर्फ ईश्वर ही हमें हर प्रकार से सुरक्षित, संरक्षित और प्रेम आनन्द से भर सकते हैं। और ये तभी संभव है, जब गुरु कृपा हो।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से लॉस एंजिलिस से संबोधित करते हुए स्वामी चिदानंद

क्रिया दीक्षा की रात मोमबत्तियों के प्रकाश से जगमगाता स्मृति मन्दिर

लांस एंजेलिस से स्वामी चिदानन्द ने ऊँ से भक्तों को कराया साक्षात्कार

शरद संगम के प्रथम दिन बड़ी संख्या में योगदा सत्संग आश्रम में पधारे, देश-दुनिया के भक्तों पर अपना आशीर्वाद लुटाते, लांस एंजिल्स से स्वामी चिदानन्द ने कहा कि ये बहुत ही सुंदर मौका है। गुरु की कृपा से आप सभी रांची के योगदा सत्संग आश्रम में एकत्रित हैं। स्वामी चिदानन्द ने कहा कि इस पवित्र मौके पर वे भी उनके साथ है, ये अलग बात है कि शरीर वहां नहीं है, पर आत्मा की तरंगे वहीं पर हैं। उनका आशीर्वाद ईश्वरीय कृपा से आकाश मार्ग से होता हुआ, आप सभी पर बरस रहा है। स्वामी जी ने कहा कि जब आप मन और हृदय का द्वार खोल देते हैं, तो आपको प्राप्त करने के लिए कुछ भी नहीं बचता। आप सबसे पहले संसारिकता और परेशानियों को धो डालें। पवित्र मन से गुरु का ध्यान करें। प्रतिज्ञा करें कि आप प्रकाश है और दिव्य प्रकाश से आलोकित हैं, उस प्रकाश से ही स्वयं को अभिव्यक्त कर, स्वयं तथा दूसरों को भी आलोकित करेंगे। स्वामी चिदानन्द ने कहा कि ऊं के स्पन्दन को, उसकी ध्वनियों को, अनुभवों को महसूस करें, क्योंकि ऊं के तीन पहलू है। उन्होंने कहा कि याद रखे, ईश्वर और गुरु में कोई अन्तर नहीं, ध्यान की अवस्था में गुरु ऊं के ही मूर्त्तरूप है। हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमें ऐसे गुरु मिले, जिन्होंने मेरा साथ कभी नहीं छोड़ा, हमेशा मेरा साथ दिया।

जीवन में ईश्वर एवं गुरु पर विश्वास जरुरी

शरद संगम के दूसरे दिन प्रार्थना में जीवन की प्रत्येक परिस्थिति में ईश्वर एवं गुरु में विश्वास रखना विषय पर बोलते हुए स्वामी नित्यानन्द ने योगदा से जुड़े भक्तों को कहा, ज्यादातर देखने में आया है कि जब हम अपनी कोशिशों से हार जाते हैं तब प्रार्थना पर ध्यान देते हैं, पहले हम अपने बुद्धिबल, धनबल तथा बाहुबल से उन हर चीजों को प्राप्त करने की कोशिश करते हैं।, जो पाना चाहते हैं और जब नहीं मिली तो हारे को हरिनाम के आधार पर भगवान के शरण में चले जाते हैं। उन्होंने कहा कि भगवान से जो भी कुछ मांगना हो, मांगने के पहले सोच लीजिये। वहीं मांगिये, जो ईश्वर आपको सहर्ष प्रदान कर दें। यही नहीं दूसरों को जिससे नुकसान पहुंचता है, ऐसी मांग कभी भी ईश्वर के समक्ष मत रखिये।

खाली मन को ईश्वरीय प्रेम से भरना जरूरी

शरद संगम के चौथे दिन स्वामी ईश्वरानन्द ने अन्तर्शक्ति एवं शांतचित्तता के साथ जीवन संग्राम का सामना कैसे करें, विषयक पर बोलते हुए कहा कि जैसा कि विषय में ही निहित है कि अन्तर्शक्ति एवं शांतचित्तता एक ऐसा हथियार है कि आप जीवन संग्राम पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। सही मनोवृत्ति द्वारा मनोदशाओं पर विजय कैसे प्राप्त करें, विषयक पर अपनी बातें रखते हुए ब्रह्मचारी आद्यानन्द ने कहा कि मनोवृत्तियां कार्मिक हैं। और ये पूर्व की इच्छाएं हैं, जो मनोदशा के रूप में सामने आती हैं और इसे हमने खुद अपने कर्मों द्वारा प्राप्त किया है। आद्यानन्द ने कहा कि हमें यह समझना होगा कि ये संसार ड्रामा है और इसे ड्रामा के अलावा कुछ हम अलग न सोचे। इधर स्वाध्याय, आध्यात्मिक पठन एवं आत्मविश्लेषण की योग साधना में महत्व को बताते हुए स्वामी हितेषानन्द ने कहा कि एक योग ही है, जिसमें कथनी और करनी में अंतर नहीं चलता। योग अपने आप में एक विज्ञान है, जो ईश्वर से एक सामान्य व्यक्ति का साक्षात्कार करा देता है। उन्होंने कहा कि ईश्वर से आत्मसाक्षात्कार किया गुरु वहीं आनन्द प्रदान करता है, जो ईश्वर से प्राप्त हो सकता है, उन्होंने बताया कि जो ईश्वरीय ज्ञान को भूल गया, जो अपने विचारों की शुद्धता को खो बैठा, जो अपने हृदय में मलिनता लिए बैठा है, वह स्वाध्याय का आनन्द नहीं उठा सकता, जरुरत है, ईश्वरीय ज्ञान के प्रति ललक को बढ़ाने की तथा अपने विचारों एवं हृदय की शुद्धता को बरकरार रखने की।

क्रिया योग लेने के लिए देश विदेश के भक्तों में दिखा उत्साह

शरद संगम के पांचवे दिन क्रिया योग की दीक्षा लेने के लिए भक्तों में होड़ सी दिखी। सारे भक्तों के हृदय में भक्ति की अविरल धारा बह रही थी, जो उनके चेहरे पर साफ दिख रही थी। योगदा सत्संग आश्रम के स्वामी ईश्वरानन्द ने क्रिया दीक्षा देने के पूर्व क्रिया योग के रहस्यों से पर्दा उठाया तथा महायोगी परमहंस योगानन्द जी के बताये क्रिया योग को भक्त कैसे जीवन में लाएं, इसकी विस्तार से चर्चा की। देश के सभी राज्यों से बड़ी संख्या में जुटे हजारों भक्तों ने इस बार शरद संगम में भाग लिया। इनकी संख्या करीब 3500 से भी ज्यादा थी। यहीं हाल विदेशों से आनेवाले भक्तों की थी, करीब 20 से अधिक देशों के लोगों ने शरद संगम में भाग लिया।

साधना और ध्यान में एकाग्रता के लिए गुरु की कृपा आवश्यक

शरद संगम के तीसरे दिन स्वामी नित्यानन्द ने साधना और ध्यान से कैसे हम सफलता प्राप्त कर सकते हैं, इस संबंध में अपने अनुभवों को भक्तों के साथ साझा किया। उनका कहना था कि ध्यान का मतलब ही है कि भगवान के सिवा दूसरे का ध्यान नहीं करना। और जिसने इस ध्यान को साधना का मार्ग बना दिया, तो समझ लीजिये, उसका कल्याण हो गया। उसे सफलता मिलनी सुनिश्चित है। उन्होंने कहा कि जिस किसी ने गुरु के साथ अन्तरसम्पर्क बनाये रखा, गुरुजी के बताये पाठ का अनुशरण किया, गुरुओं पर भरोसा रखा, उसे सफलता मिली। क्योंकि सच्चे गुरु हमेशा ईश्वर के समान है और वे अपने भक्तों पर कृपा लुटाते रहते हैं। ब्रह्मचारी धैर्यानन्द ने विचारों की परिवर्तनकारी शक्ति पर अपनी बातें रखी। उनका कहना था कि आप यह जान लें कि जीवन का लक्ष्य ईश्वर को पाना है, और मनुष्य शरीर, मन और आत्मा के वशीभूत हैं, हम मन के माध्यम से ही आत्मा को जानते हैं, जो आत्मा आनन्द का स्रोत है। धैर्यानन्द ने कहा कि आप जान लें कि लहरों को समुद्र बनाती है, समुद्र लहर नहीं हो सकता। ठीक उसी प्रकार हमें ईश्वर ने बनाया पर हम ईश्वर नहीं हो सकते। हमें उन्हें हर हाल में पाना है।